nbt.india

एकः सूते सकलम्

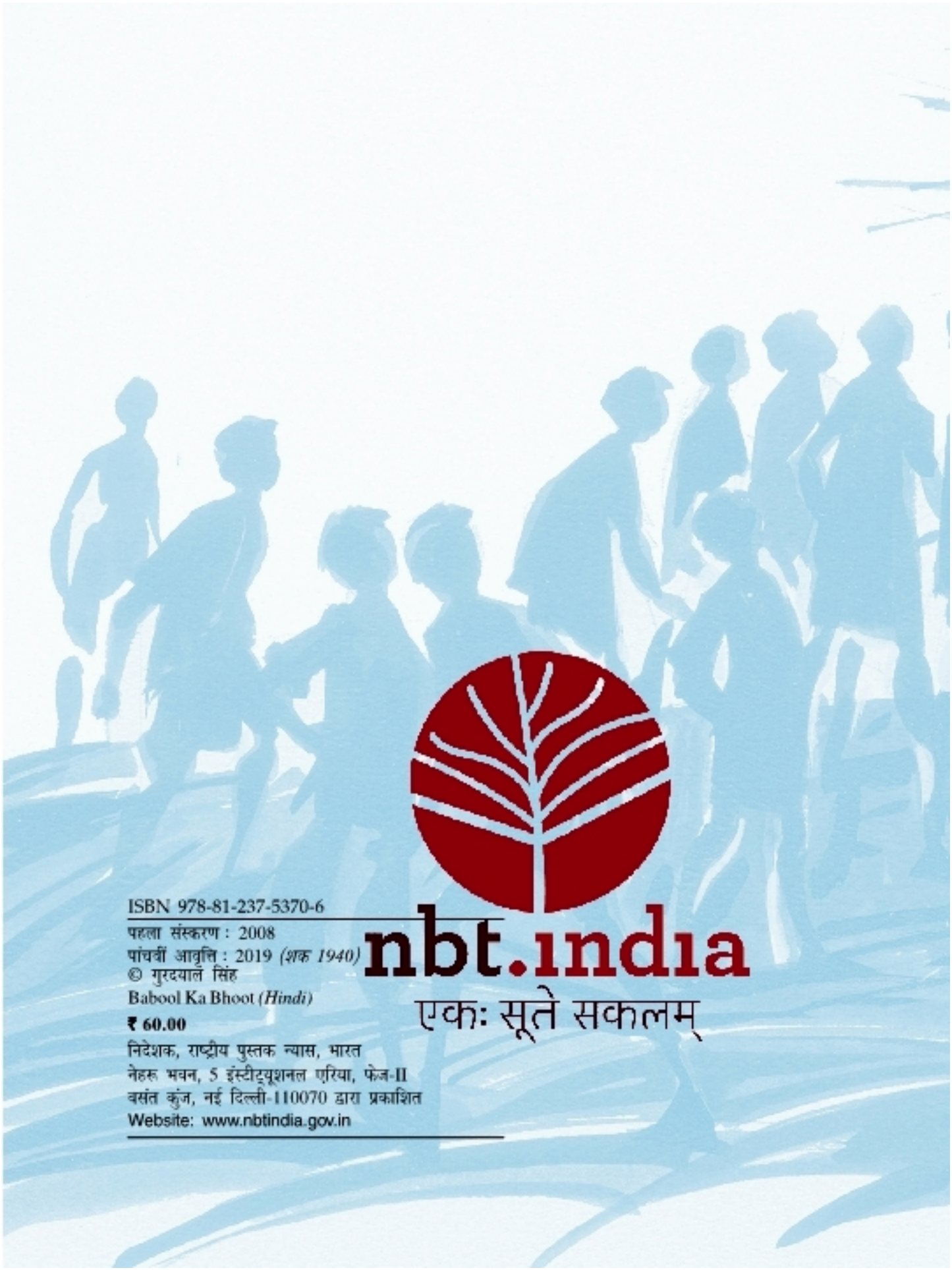

ISBN 978-81-237-5370-6

पहला संस्करण : 2008

पांचवीं आवृत्ति : 2019 *(शक 1940)*

© गुरदयाल सिंह

Babool Ka Bhoot *(Hindi)*

₹ 60.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II

वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित

Website: www.nbtindia.gov.in

nbt.india

एकः सूते सकलम्

नेहरू बाल पुस्तकालय

बबूल का भूत

गुरदयाल सिंह

चित्रांकन
दुर्गादत्त पांडेय

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

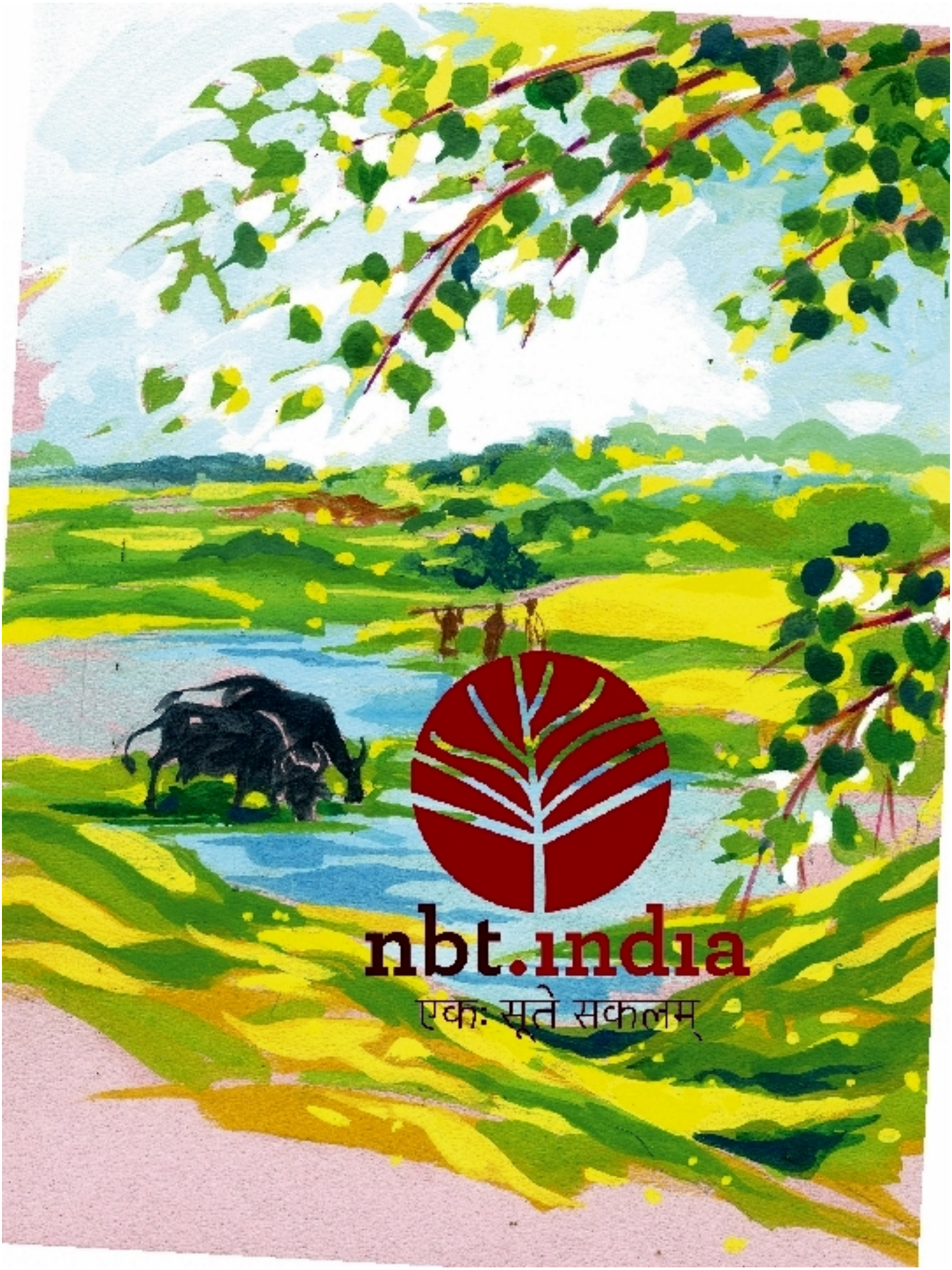

nbt.india

एकः सूते सकलम्

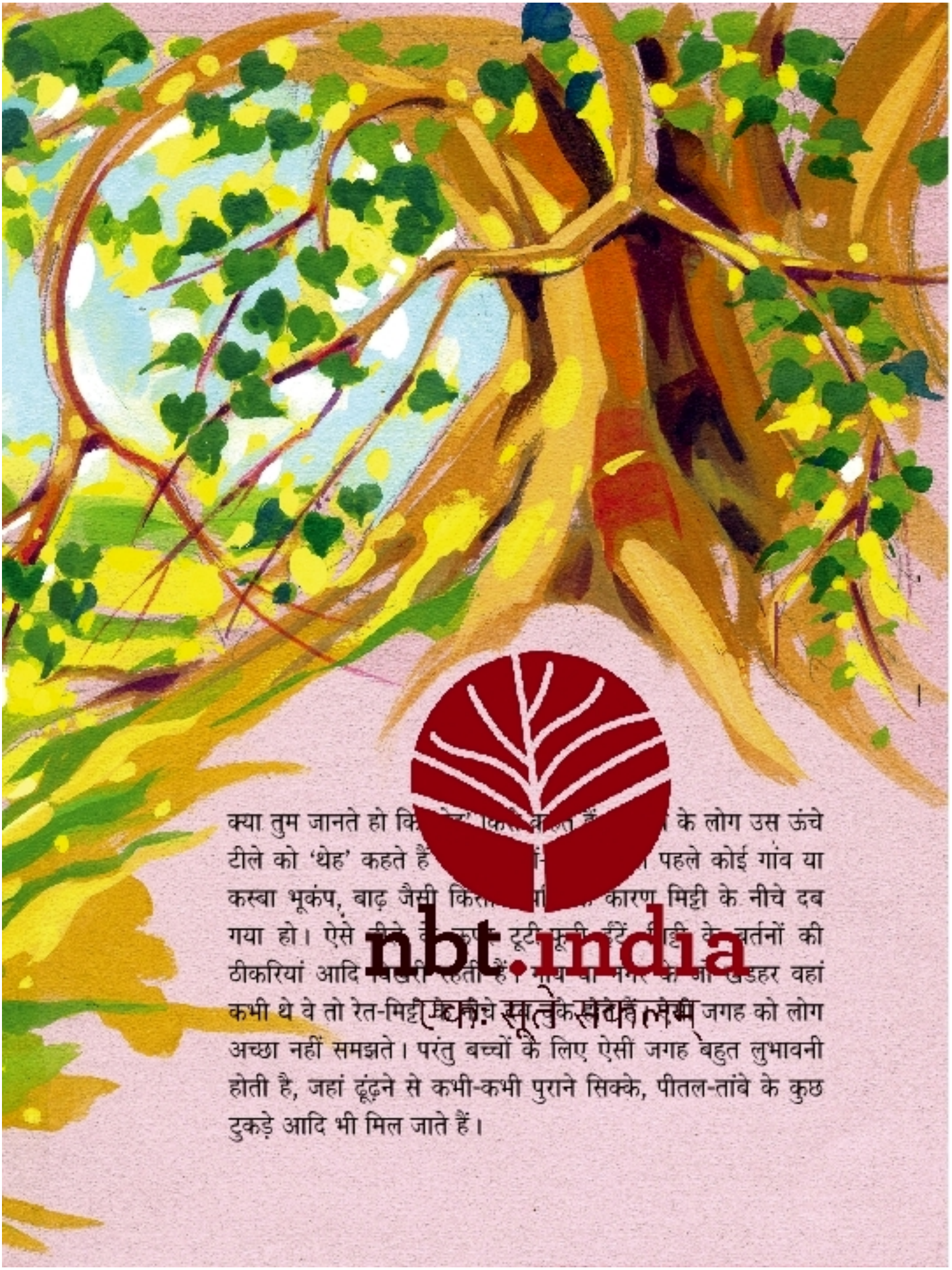

क्या तुम जानते हो कि [illegible] के लोग उस ऊंचे टीले को 'थेह' कहते हैं [illegible] पहले कोई गांव या कस्बा भूकंप, बाढ़ जैसी कि[illegible] कारण मिट्टी के नीचे दब गया हो। ऐसे [illegible] टूटी-फूटी ईंटें, [illegible] के बर्तनों की ठीकरियां आदि [illegible] खंडहर वहां कभी थे वे तो रेत-मिट्टी [illegible] जगह को लोग अच्छा नहीं समझते। परंतु बच्चों के लिए ऐसी जगह बहुत लुभावनी होती है, जहां ढूंढ़ने से कभी-कभी पुराने सिक्के, पीतल-तांबे के कुछ टुकड़े आदि भी मिल जाते हैं।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

हमारे गांव का एक ऐसा ही थेह गांव से थोड़ी दूर था छोटी नहर के पास। उसी के पास एक छोटा-सा तालाब था। तालाब इतना गहरा था कि यदि बरसात के बाद साल भर भी बारिश न हो तो भी इसमें कुछ न कुछ पानी जरूर बचा रहता था। इसीलिए वहां चरवाहे अपनी भेड़-बकरियों और गाय-भैंसों को पानी पिलाने के लिए ले जाया करते थे। परंतु और लोग इस तालाब के पास नहीं जाते थे। इसका कारण यह था कि हमारे गांव के लोग इस थेह से बहुत डरते थे। लोग, सूबेदार की हवेली को जैसे भूत-प्रेतों का घर मानते थे, उसी तरह थेहों, खंडहरों तथा बेकार पड़े कुओं तथा बावड़ियों में भी बुरी आत्माओं का बसेरा मानते थे।

केवल इतना ही नहीं, हमारे गांव के लोग ऐसी जगहों के आसपास के पेड़ों को भी अशुभ मानते थे। समझा जाता था कि ऐसे पेड़ों पर भी भूत-प्रेत रहा करते हैं। इसीलिए ऐसे कुछ वृक्षों का नाम हमारे लोगों ने 'पक्का पीपल', 'पक्की बेरी' तथा 'पक्का बड़' आदि रख छोड़े थे। ऐसे पेड़ों से हम बच्चे इतना डरा करते कि वहां जाने का साहस न कर पाते थे ('पक्का' का अर्थ होता था कि उस पेड़ के ऊपर कोई भूत-प्रेत रहता है, जिसके पास जाना घातक हो सकता है)।

ऐसा ही एक 'पक्का पीपल' उस [illegible] पास था। यह पीपल बहुत ऊंचा तथा फैला हुआ था। हम ज[illegible] करते तो मेरी मां हमें बार-बार चेतावनी देती। कहा क[illegible] पास मत जाना। वहां कितनी ही गाय-भैंसें मर चुकी हैं [illegible]

परंतु एक दिन घुदू ने कहा, ''[illegible] ही चलेंगे।''

मैंने डरकर कहा, ''नहीं भाई। मे[illegible] कि उधर मत जाना।''

''अरे चाची को क्या पता है ब[illegible]

मैंने फिर कहा, ''भाई [illegible] तो बात होगी ही। नहीं?''

घुदू गुस्से में आ गया और ऊंची आवाज से बोला, ''अबे उल्लू! सूबेदार की हवेली में भी तो भूत-प्रेत होने की बात सारे गांव के लोग कहते थे, वहां कौन-सा भूत मिला! बता? उलटा हम ही वहां जाकर भूत-प्रेत बन गये। बने कि नहीं?''

उसकी बातें मुझे तो ठीक लगतीं, परंतु मां को कौन समझाए। मैंने कहा, ''वहां

nbt.india
एक: सूते सकलम्

nbt.india

nbt.india
एकः सूते सकलम्

हमारा जाना बहुत जरूरी है क्या?" मैंने [illegible] कहा, "क्या वहां जाए बिना हमारा गुजारा नहीं होगा [illegible] जाना [illegible]

वह बोला, "हां जरूरी है। तू वहां [illegible] से नहीं देखेगा तो विश्वास कैसे करेगा? न जाने से तो [illegible] बातों से डरते हुए गीदड़ ही बना रहेगा। सच-झूट का क्या [illegible]

मुझे भी थोड़ा गुस्सा आ गया। मैंने [illegible]?"

"अबे शेर न सही, तेरी तरह चि[illegible]या के [illegible] दिल तो फिर भी नहीं है मेरा। और मैं तो ऐसी बातों के [illegible] अपने [illegible] बात ही मानता हूं।"

"वह कौन-सी?" मैंने पूछा। वह [illegible] जब तक न देखूं अपने नैना, तब तक न मानूं गुरु का कहना।' बात आ गयी मेरी समझ में!"

बात तो मेरी समझ में आ जाया करती, परंतु दोनों ओर से डर भी लगा रहता।

nbt.india
एकः सूत्रे सकलम्

अगर घुदू की बात मानूं तो मां-बाप [illegible] मानूं तो घुदू का डर। लेकिन एक [illegible] साथ रहते मुझे और किसी से ड[illegible] का बात और थी। सुबह-शाम उस[illegible]ता था फिर डरता कैसे नहीं?

हम दोपहर को अपने पशु लेकर [illegible] नीचे चले गये। पशुओं ने पेट भर पानी पी[illegible] में बै[illegible] लगे। घुदू को तो किसी बात का [illegible] अंगोछा बिछाकर लेट गया और गीत गाने [illegible]

सुनो सुनो रे भाई दीसा
तूने कूटी लाल मिरचिया
हमने आटा पीसा!

nbt.india
एकः सूते सकलम्

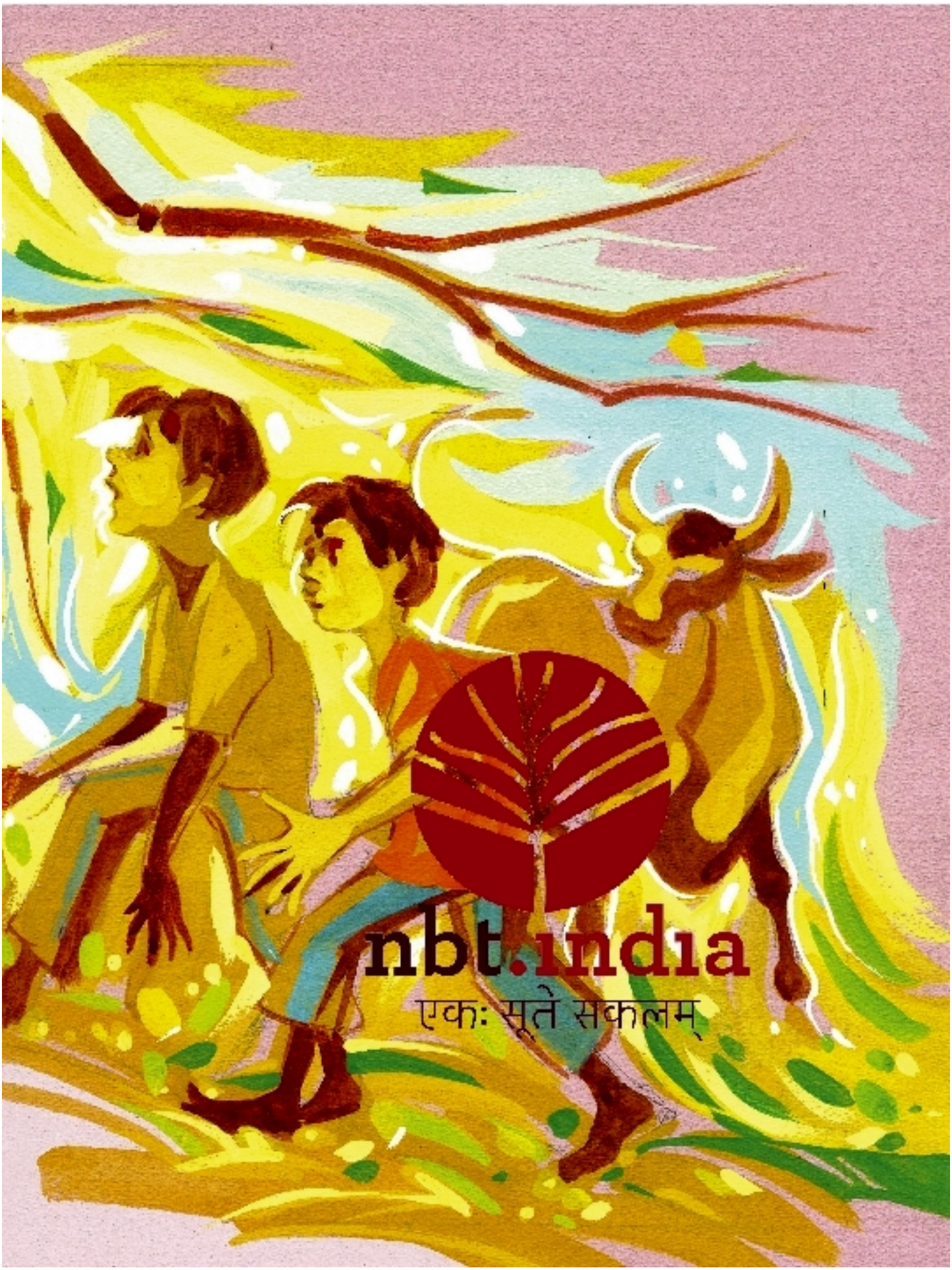

nbt.india

एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

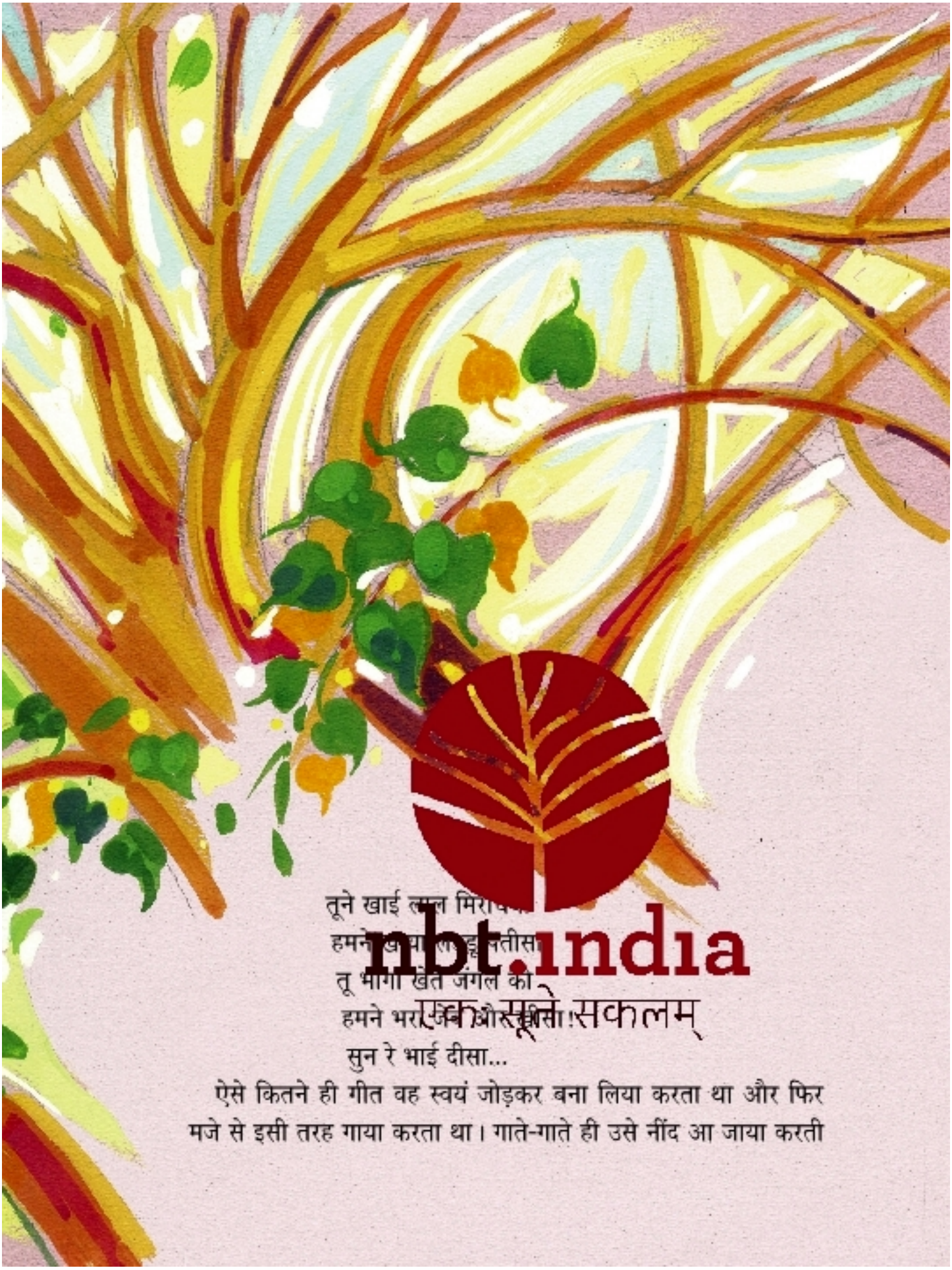

तूने खाई लाल मिर[illegible]

हमने [illegible] छत्तीस,

तू भागा खेत जंगल की,

हमने भरा [illegible] खीसा!

सुन रे भाई दीसा...

ऐसे कितने ही गीत वह स्वयं जोड़कर बना लिया करता था और फिर मजे से इसी तरह गाया करता था। गाते-गाते ही उसे नींद आ जाया करती

nbt.india
एक सूत्रे सकलम्

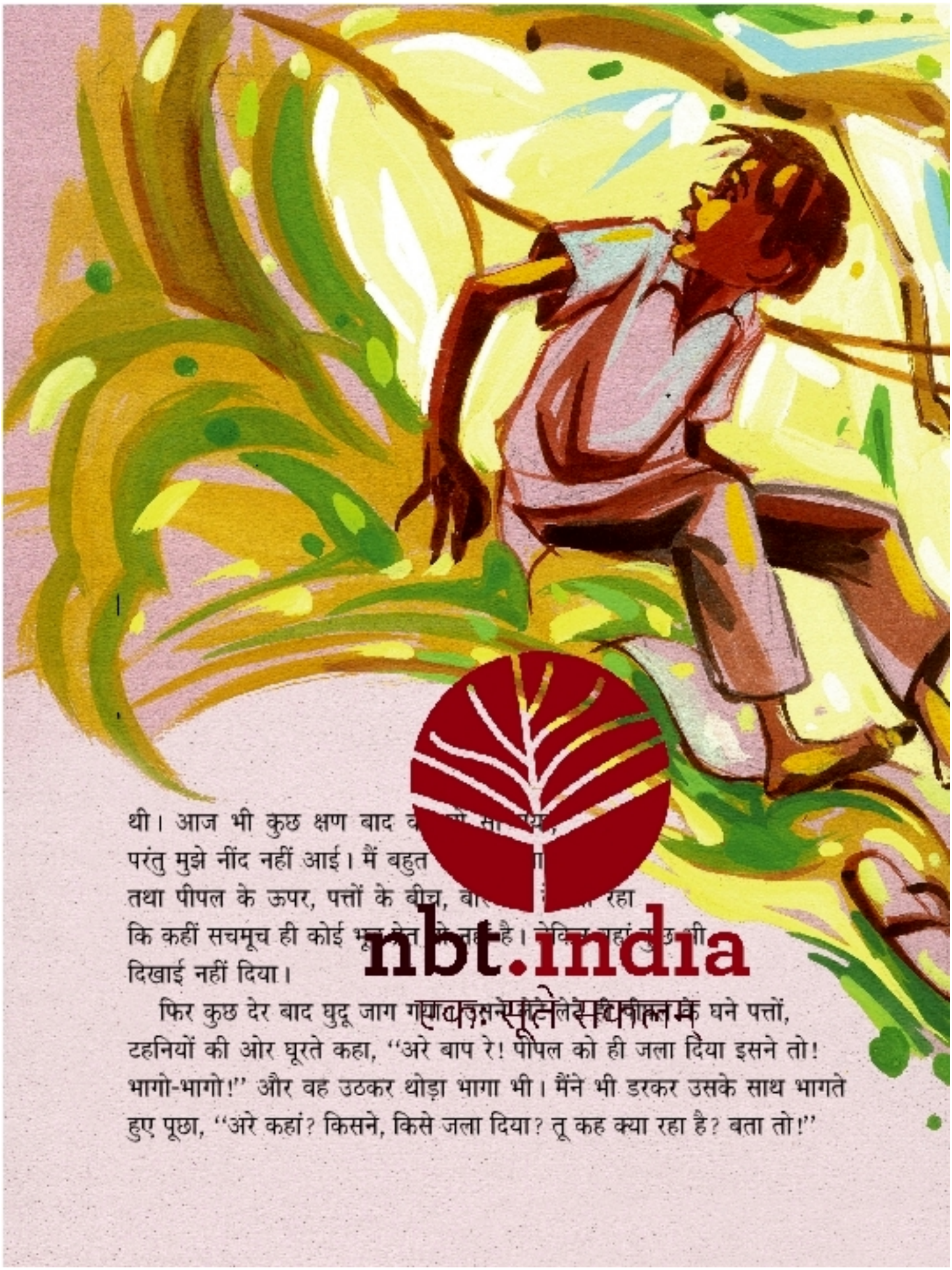

थी। आज भी कुछ क्षण बाद [illegible] सा [illegible],
परंतु मुझे नींद नहीं आई। मैं बहुत [illegible]
तथा पीपल के ऊपर, पत्तों के बीच, बा[illegible] रहा
कि कहीं सचमूच ही कोई [illegible] है। [illegible] कुछ भी
दिखाई नहीं दिया।

फिर कुछ देर बाद घुदू जाग [illegible] के घने पत्तों, टहनियों की ओर घूरते कहा, "अरे बाप रे! पीपल को ही जला दिया इसने तो! भागो-भागो!" और वह उठकर थोड़ा भागा भी। मैंने भी डरकर उसके साथ भागते हुए पूछा, "अरे कहां? किसने, किसे जला दिया? तू कह क्या रहा है? बता तो!"

nbt.india

nbt.india

एकः सूते सकलम्

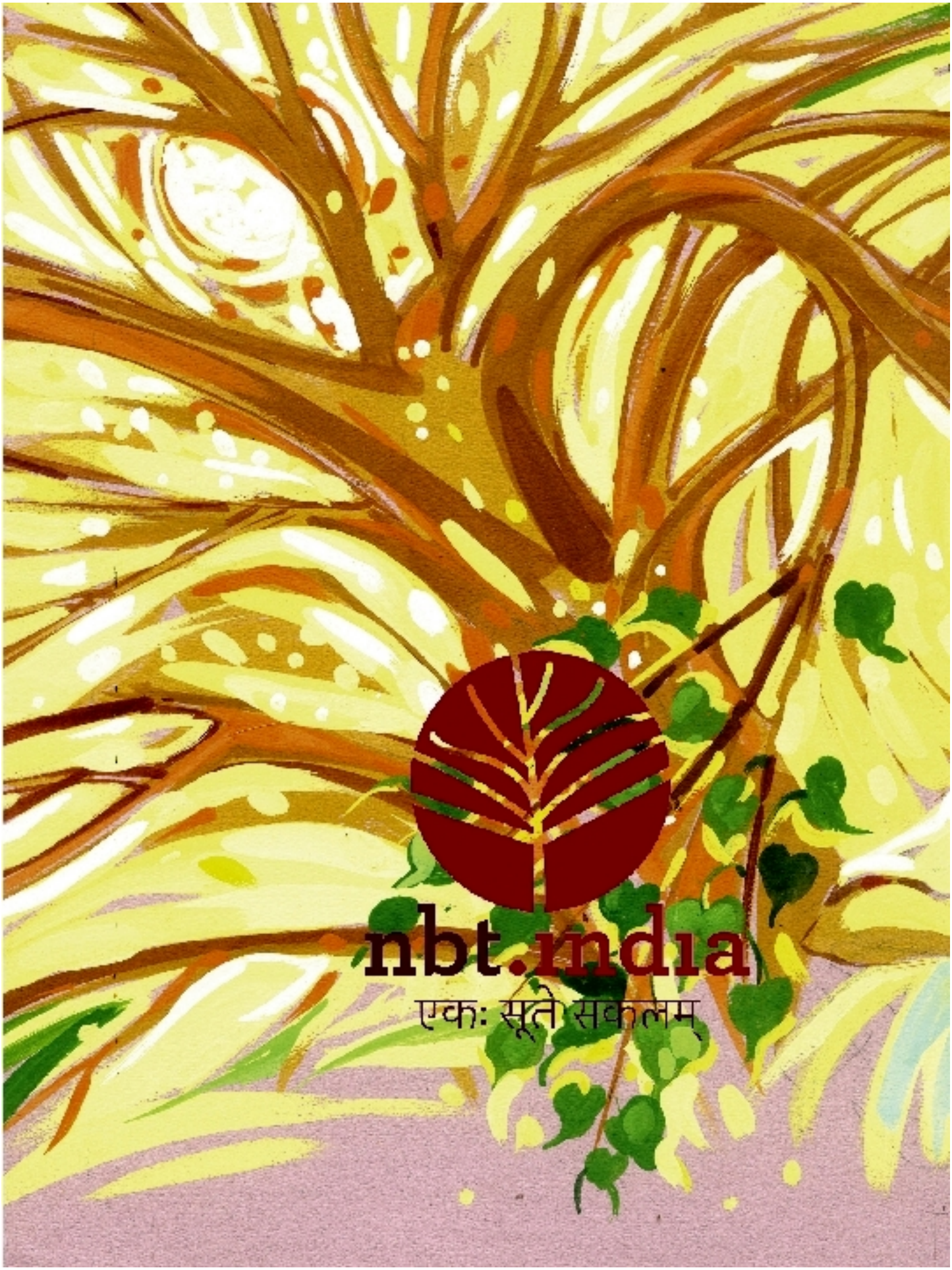
nbt.india
एकः सूते सकलम्

फिर रुककर उसी तरह आंखें फैलाए, ऊपर की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, "वह देख, आग लगी है। लपटें निकल रही हैं...और..."

उसका भयभीत चेहरा देखकर मेरा तो पसीना छूटने लगा। फटी-फटी आंखों से जिधर वह देख रहा था, मैंने भी देखा तो तो वहां सचमुच ही आग की लपटें दिखाई दीं। मेरा चेहरा तो एकदम फक्क पड़ गया। परंतु तभी वह ठहाका मारकर हंस दिया।

"तुझे क्या हुआ है बे?" मैंने गुस्से और डर से पूछा।

क्षण भर तो मुझे यह भी चिंता होने लगी कि कहीं किसी भूत-प्रेत की छाया तो उसके ऊपर नहीं पड़ गयी जिसके कारण वह पागल हो गया हो?

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

परंतु तभी वह हंसी रोकते हुए बोला, "पता चला कि गीदड़ कौन है और शेर कौन?"

"क्या मतलब है तेरा?"

"मतलब सिर्फ इतना है कि मैं तुझे यही बताना चाहता था कि तू कितना बहादुर है। अरे उल्लू! जिसे तू आग समझ रहा है वह तो पत्तों में दिखाई दे रही सूरज की धूप की चमक है। थोड़ी आंखें खोलकर तो देख कि वहां क्या है।"

जब मैंने ध्यान से देखा तो मुझे बहुत शर्म आई कि केवल उसके 'आग-आग' कहने से ही मैं क्यों डर गया था। ज्यादा शर्म मुझे इसी बात पर आ रही थी कि मैं सचमुच डरपोक हूं जो बिना बात के ही डर गया। इधर मैं शर्म के मारे पानी-पानी

nbt.india
एकः सूते सकलम्

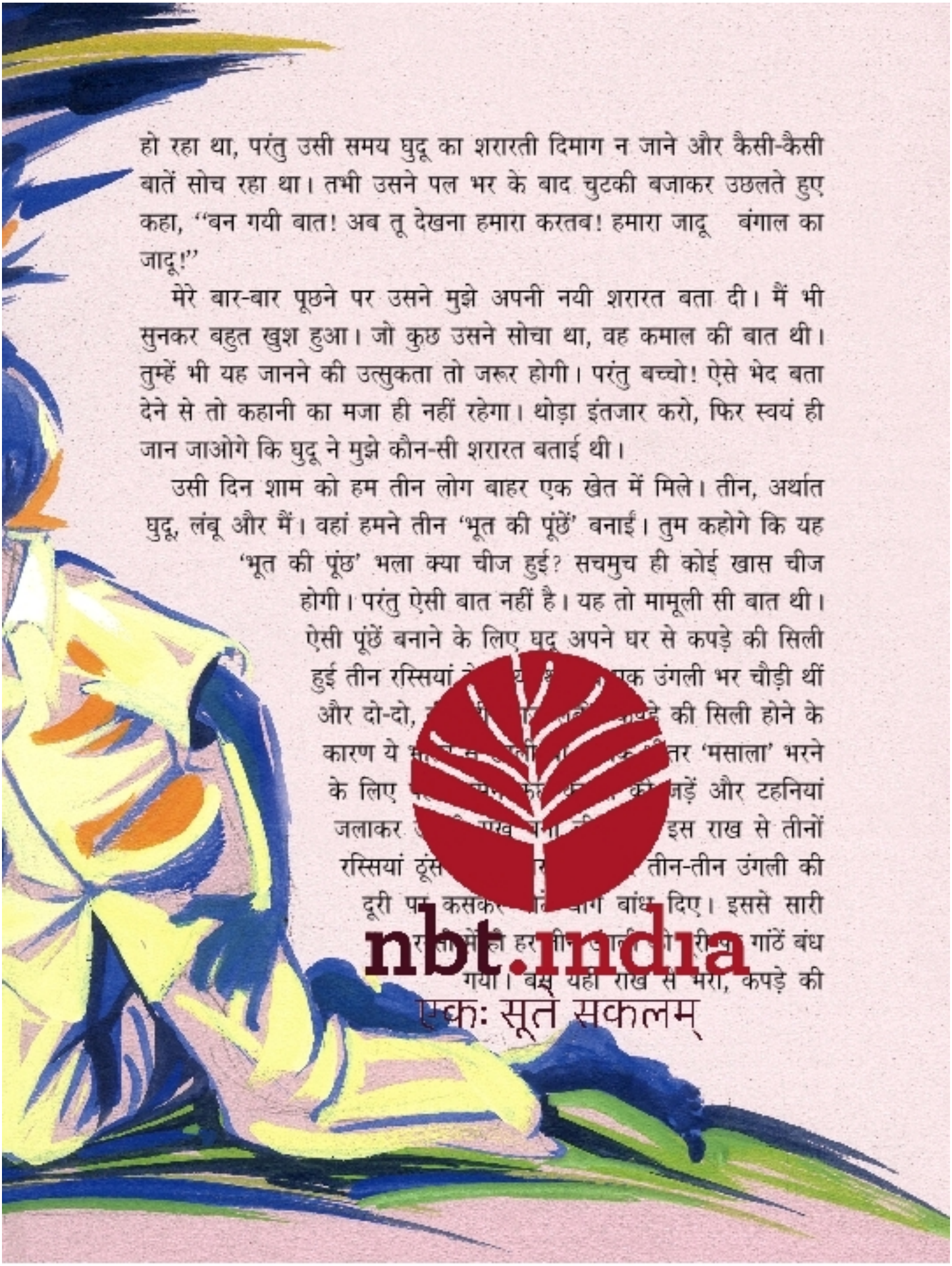

हो रहा था, परंतु उसी समय घुदू का शरारती दिमाग न जाने और कैसी-कैसी बातें सोच रहा था। तभी उसने पल भर के बाद चुटकी बजाकर उछलते हुए कहा, ''बन गयी बात! अब तू देखना हमारा करतब! हमारा जादू   बंगाल का जादू!''

मेरे बार-बार पूछने पर उसने मुझे अपनी नयी शरारत बता दी। मैं भी सुनकर बहुत खुश हुआ। जो कुछ उसने सोचा था, वह कमाल की बात थी। तुम्हें भी यह जानने की उत्सुकता तो जरूर होगी। परंतु बच्चो! ऐसे भेद बता देने से तो कहानी का मजा ही नहीं रहेगा। थोड़ा इंतजार करो, फिर स्वयं ही जान जाओगे कि घुदू ने मुझे कौन-सी शरारत बताई थी।

उसी दिन शाम को हम तीन लोग बाहर एक खेत में मिले। तीन, अर्थात घुदू, लंबू और मैं। वहां हमने तीन 'भूत की पूंछें' बनाई। तुम कहोगे कि यह 'भूत की पूंछ' भला क्या चीज हुई? सचमुच ही कोई खास चीज होगी। परंतु ऐसी बात नहीं है। यह तो मामूली सी बात थी। ऐसी पूंछें बनाने के लिए घुदू अपने घर से कपड़े की सिली हुई तीन रस्सियां [illegible] एक उंगली भर चौड़ी थीं और दो-दो, [illegible] कपड़े की सिली होने के कारण ये [illegible] अंदर 'मसाला' भरने के लिए [illegible] की जड़ें और टहनियां जलाकर [illegible] इस राख से तीनों रस्सियां ठूंस [illegible] तीन-तीन उंगली की दूरी पर कसकर [illegible] बांध दिए। इससे सारी रस्सियों [illegible] गांठें बंध गया। बस यही राख से भरा, कपड़े की

nbt.india
एकः सूते सकलम्

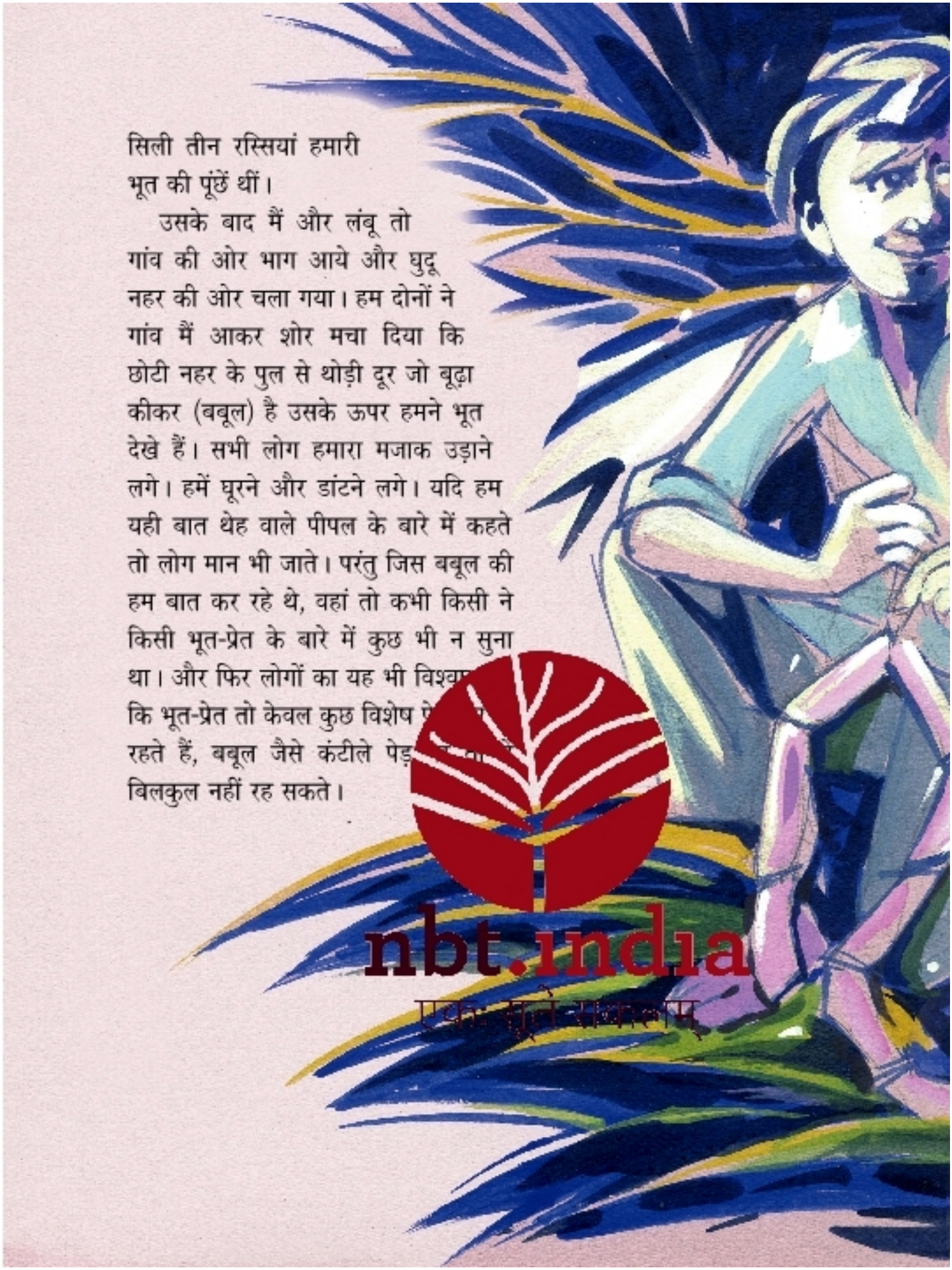

सिली तीन रस्सियां हमारी भूत की पूंछें थीं।

उसके बाद मैं और लंबू तो गांव की ओर भाग आये और घुदू नहर की ओर चला गया। हम दोनों ने गांव में आकर शोर मचा दिया कि छोटी नहर के पुल से थोड़ी दूर जो बूढ़ा कीकर (बबूल) है उसके ऊपर हमने भूत देखे हैं। सभी लोग हमारा मजाक उड़ाने लगे। हमें घूरने और डांटने लगे। यदि हम यही बात थेह वाले पीपल के बारे में कहते तो लोग मान भी जाते। परंतु जिस बबूल की हम बात कर रहे थे, वहां तो कभी किसी ने किसी भूत-प्रेत के बारे में कुछ भी न सुना था। और फिर लोगों का यह भी विश्वा... कि भूत-प्रेत तो केवल कुछ विशेष पे... रहते हैं, बबूल जैसे कंटीले पेड़... बिलकुल नहीं रह सकते।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

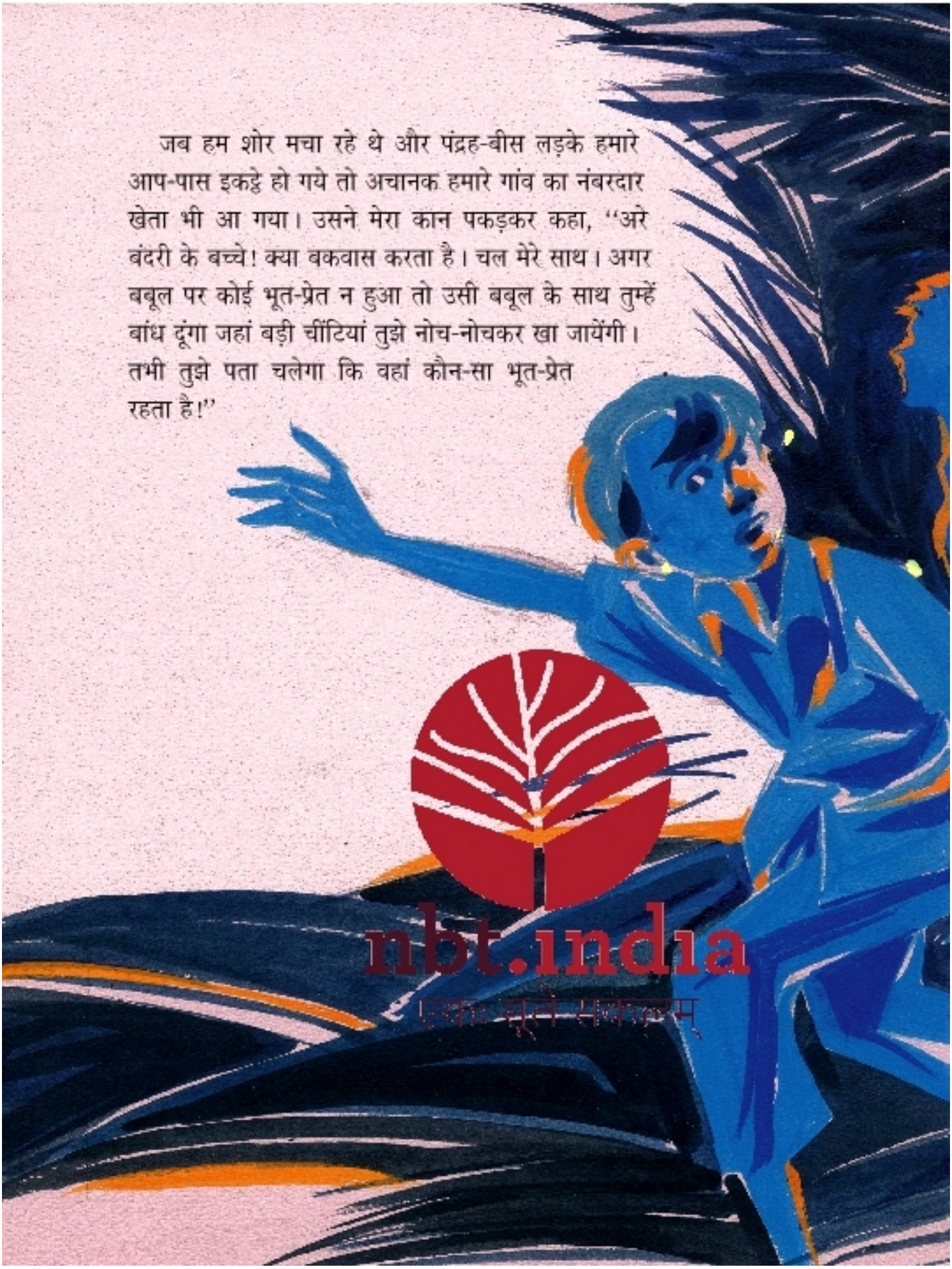

जब हम शोर मचा रहे थे और पंद्रह-बीस लड़के हमारे आप-पास इकट्ठे हो गये तो अचानक हमारे गांव का नंबरदार खेता भी आ गया। उसने मेरा कान पकड़कर कहा, "अरे बंदरी के बच्चे! क्या बकवास करता है। चल मेरे साथ। अगर बबूल पर कोई भूत-प्रेत न हुआ तो उसी बबूल के साथ तुम्हें बांध दूंगा जहां बड़ी चींटियां तुझे नोच-नोचकर खा जायेंगी। तभी तुझे पता चलेगा कि वहां कौन-सा भूत-प्रेत रहता है!"

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

हमें तो सारी बात का पता था। मैंने बांह छुड़वाते हुए दृढ़ता से कहा, "अच्छा चाचा, अभी चलो हमारे साथ। अगर वहां भूत हुए तो फिर हमें क्या दोगे?"

खेता नंबरदार बोला, "कल तुम सभी को गुड़ में बने चावल खिलाऊंगा भरपेट। मजे से खाना।"

मैंने छाती ठोंकते हुए कहा, "तो अभी हमारे साथ चलो!"

वह भी बहुत अजीब आदमी था। उसी समय साथ हो लिया। बीस-पच्चीस लड़कों तथा नंबरदार के साथ दो-तीन और आदमी भी हमारे साथ चल दिए। मैं और लंबू आगे-आगे थे और वे सभी हमारे पीछे आ रहे थे। पूरा एक जुलूस बन गया। परंतु जब तक हम बबूल के कुछ पास तक पहुंचे, तब तक सांझ भी घिर आई। अंधेरा

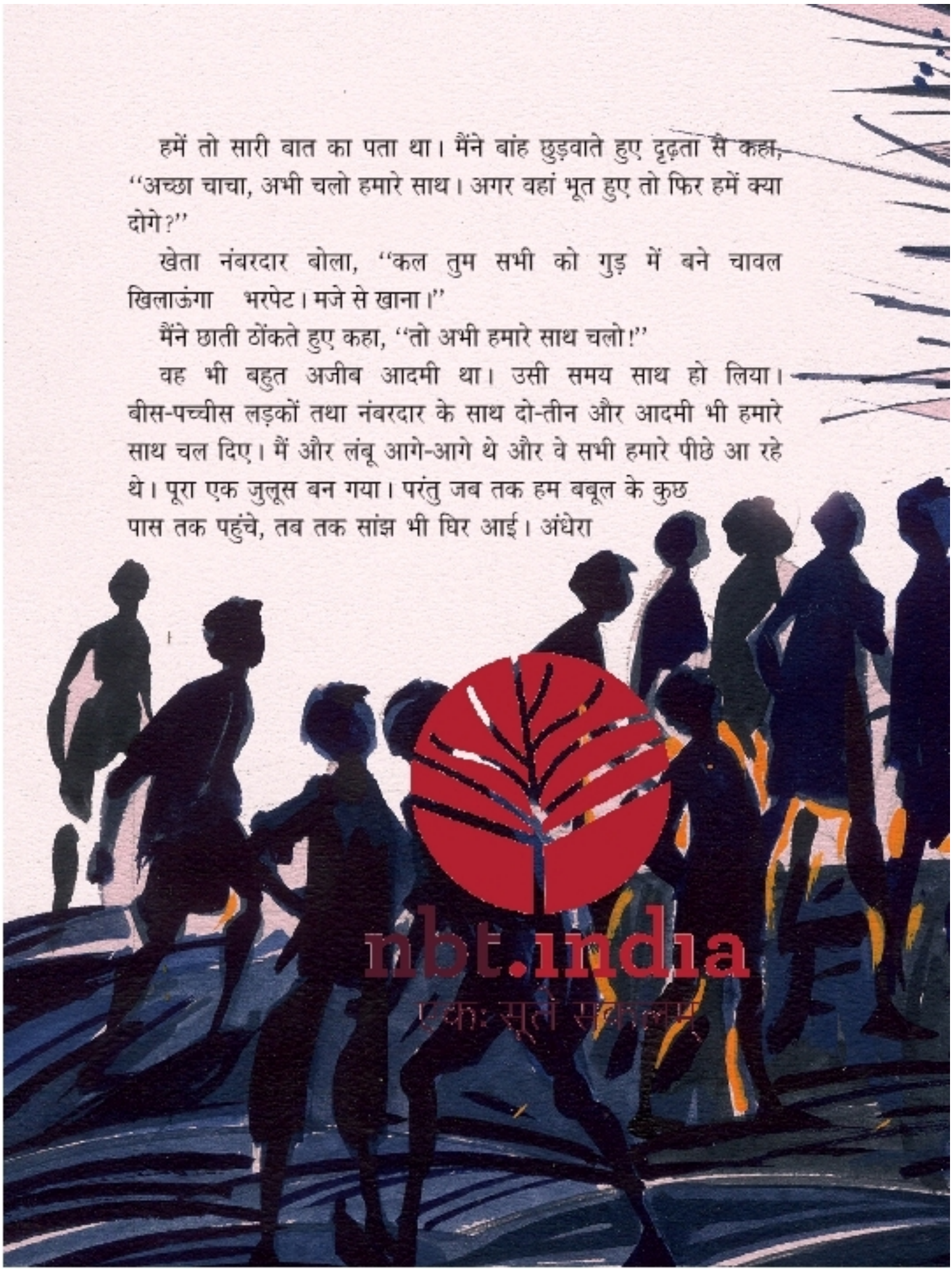

nbt.india

होने लगा था और कोई-कोई तारा भी चमकने लगा था। जिस रास्ते से हम जा रहे थे उससे केवल सौ-डेढ़ सौ गज की दूरी पर ही वह बबूल होगा। जब लंबू, अपने जिम्मे लगे काम के लिए तैयार हो गया तो मैंने उनका हाथ पकड़कर दबा दिया। उसी समय वह जोर से चीखें मारकर पीछे गांव की ओर भागने लगा, और जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

"खा-खा-खा-ग-या ले!...मा-ल दिया ले... भू-भू...त आया ले...आया ले!..."

जोर-जोर से चीखते हुए वह बीस-तीस कदम भागकर गिर पड़ा। मेरी हंसी निकलने को हुई जिसे मैंने बड़ी मुश्किल से रोका। लंबू जो

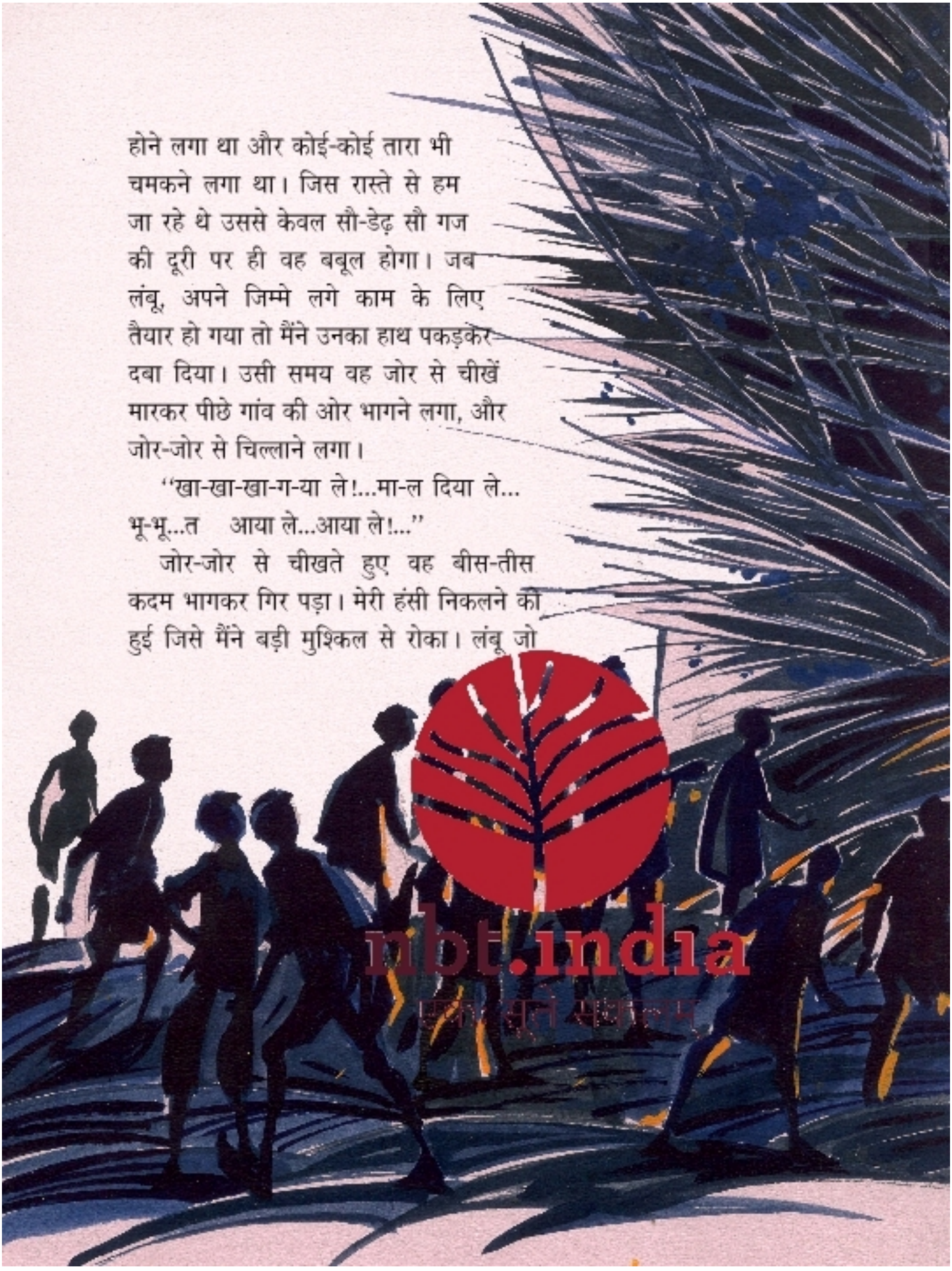

nbt.india

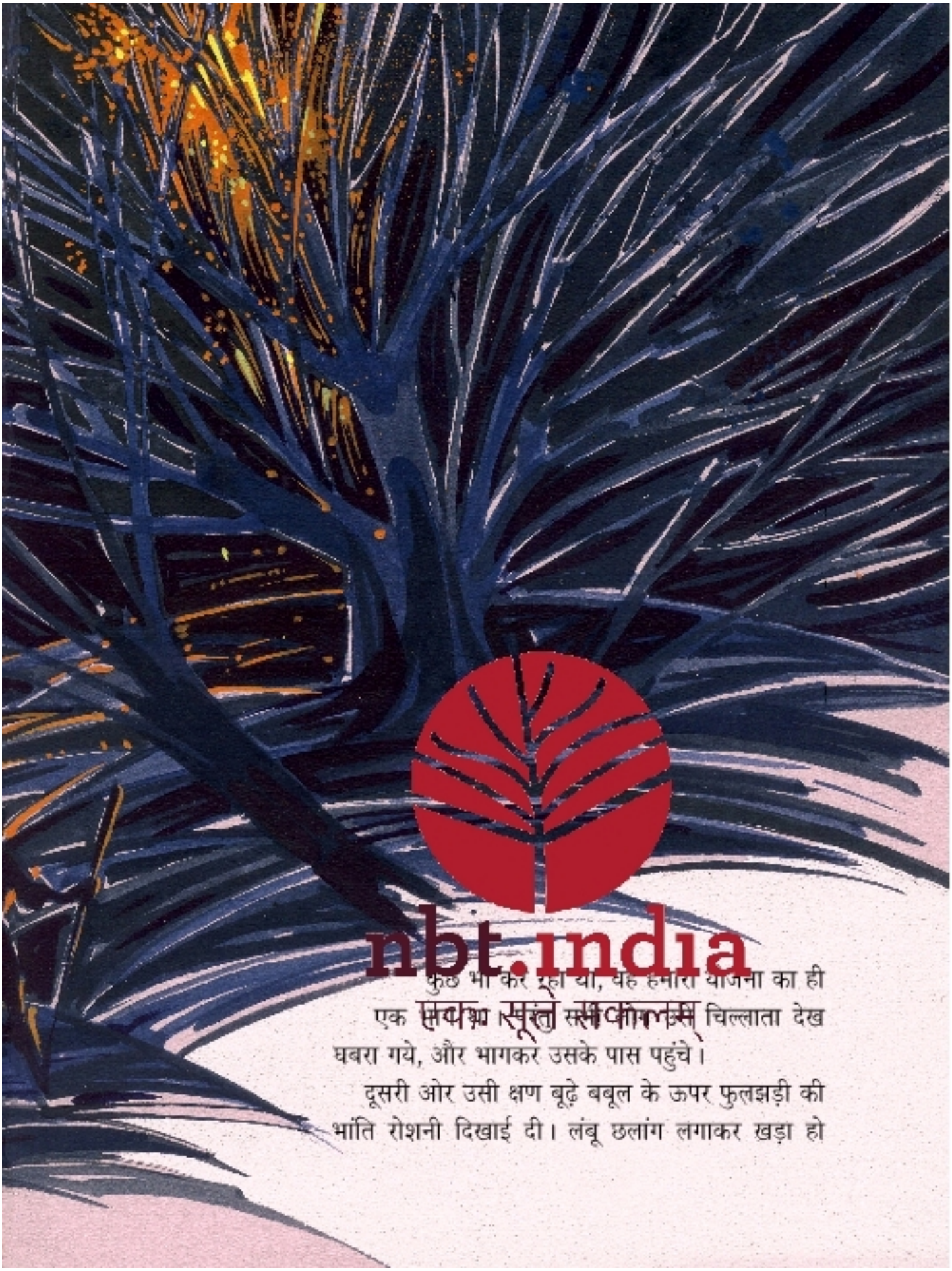

nbt.india

कुछ भी कर रहा था, वह हमारी योजना का ही एक [illegible] था। [illegible] सभी [illegible] उसे चिल्लाता देख घबरा गये, और भागकर उसके पास पहुंचे।

दूसरी ओर उसी क्षण बूढ़े बबूल के ऊपर फुलझड़ी की भांति रोशनी दिखाई दी। लंबू छलांग लगाकर खड़ा हो

गया और फिर चिल्लाया, ''व-ह-आ आ-आयी. ..भू ऊ ऊ ऊ त! भू-त!''

तभी मैंने भी कहा, ''वह देखो!...देखो चाचा! देखो भूत की करतूत! देख रहे हो न! अब बताओ?''

सभी भौंचक्के रह गये।

बबूल की टहनियों के भीतर फिर चिंगारियां छूटने लगीं और झट से बुझ गयीं। कुछ क्षण बाद चिंगारियां फिर फूटीं तो लंबू फिर शोर मचाने लगा ताकि सभी का बबूल पर भूत होने का भ्रम पक्का हो जाये।

कुछ क्षण बाद चाचा खेता बोला, ''अरे छोकरो, बात तो तुम्हारी ठीक लगती है। यह तो सचमुच किसी भूत-प्रेत की ही करतूत लगती है।''

उसके ऐसा मान लेने से हमारी आयु के सभी लड़के तो गांव की ओर खिसकने लगे। थोड़ी दूर जाकर कुछ तो मारे डर के भागने भी लगे। मैं और लंबू भी झूठमूठ का ही भय दिखाते गांव की ओर भाग आये।

लेकिन दो-तीन घंटे के बाद जब हम तीनों घुदू के पशुओं वाले बाड़े में बैठकर हंसते हुए बातें ... घुदू बोला, ''अब मेरे से बचक... का भूत हूं!''

... समझ गये होंगे कि ... योजना बनाई थी। ... घुदू के दिमाग की ही ...। वह राख से भरी कपड़े की

nbt.india
एक: सूते सकलम्

nbt.india

वे रस्सियां लेकर बूढ़े बबूल के ऊपर जा छुपा था और रस्सियां बबूल की टहनियां से बांधकर लटका दी थीं।

इधर हम दोनों योजनानुसार लड़कों तथा कुछ आदमियों को इकट्ठा करके बबूल के पास तक ले आये थे। लंबू भी हमारी योजना के अनुसार ही चीखते हुए गांव की ओर भागा था। उसकी चीख घुदू को यह बताने के लिए इशारा भर थी कि हम लड़कों तथा लोगों को ले आये हैं और वह अपना काम आरंभ करे। और घुदू ने लंबू की चीख सुनते ही उन रस्सियों के नीचे के हिस्सों को आग लगा दी थी। ये तीनों रस्सियां बारी-बारी जलने लगी थीं। जब रस्सी की एक गांठ पर बंधा धागा जल जाता तो गांठ में भरी राख जलती हुई नीचे धरती की ओर गिरती थी। ये चिंगानियां बहुत भयानक लगती थीं। और जैसे-जैसे गांठों वाले धागे जल रहे थे, ये चिंगारियां भी रह-रहकर गिरती जा रही थीं।

बस यह हमारे घुदू 'भूत' की करामात थी। अंधेरा होने के कारण न तो कीकर पर चढ़ा घुदू ही किसी को दिखाई दे रहा था और न ही वे रस्सियां दिखाई दे रही थीं। इसी कारण लोग समझते रहे कि यह किसी भूत-प्रेत की ही करतूत है। फिर हमारे साथ गये लड़कों, खेते नंबरदार तथा [illegible] सारे गांव में यह खबर जंगल की आग की तरह फैला दी। रस्सि[illegible]थीं। इसी कारण सारे गांव ने ये गिरती चिंगारियां देखी थीं। [illegible] था कि बबूल पर जरूर कोई भूत रहता है।

सब से अजीब बात तो यह [illegible]रत का भेद नहीं जान पाया। कई दिन तक लोग उस बबूल [illegible] साहस न कर सके और सभी जगह भूतों की बातें होने लगीं।

लेकिन कुछ दिन बाद [illegible] और दोस्त को बता दिया। उसकी यह आदत थी कि अधिक समय तक ऐसी बात मन में छुपाकर नहीं रख पाता था। जिस दिन उस[illegible] लोग हमें गांव के सबसे शरारती लड़के समझने लगे। घर में हमारी पिटाई भी हुई। परंतु हमने कोई परवाह नहीं की। ऐसी पिटाई तो हमारे घरों में होती ही रहती थी।

बच्चो! तब से आज तक हमारे गांव के लोग उस बूढ़े बबूल को 'बूढ़ी कीकर'

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india

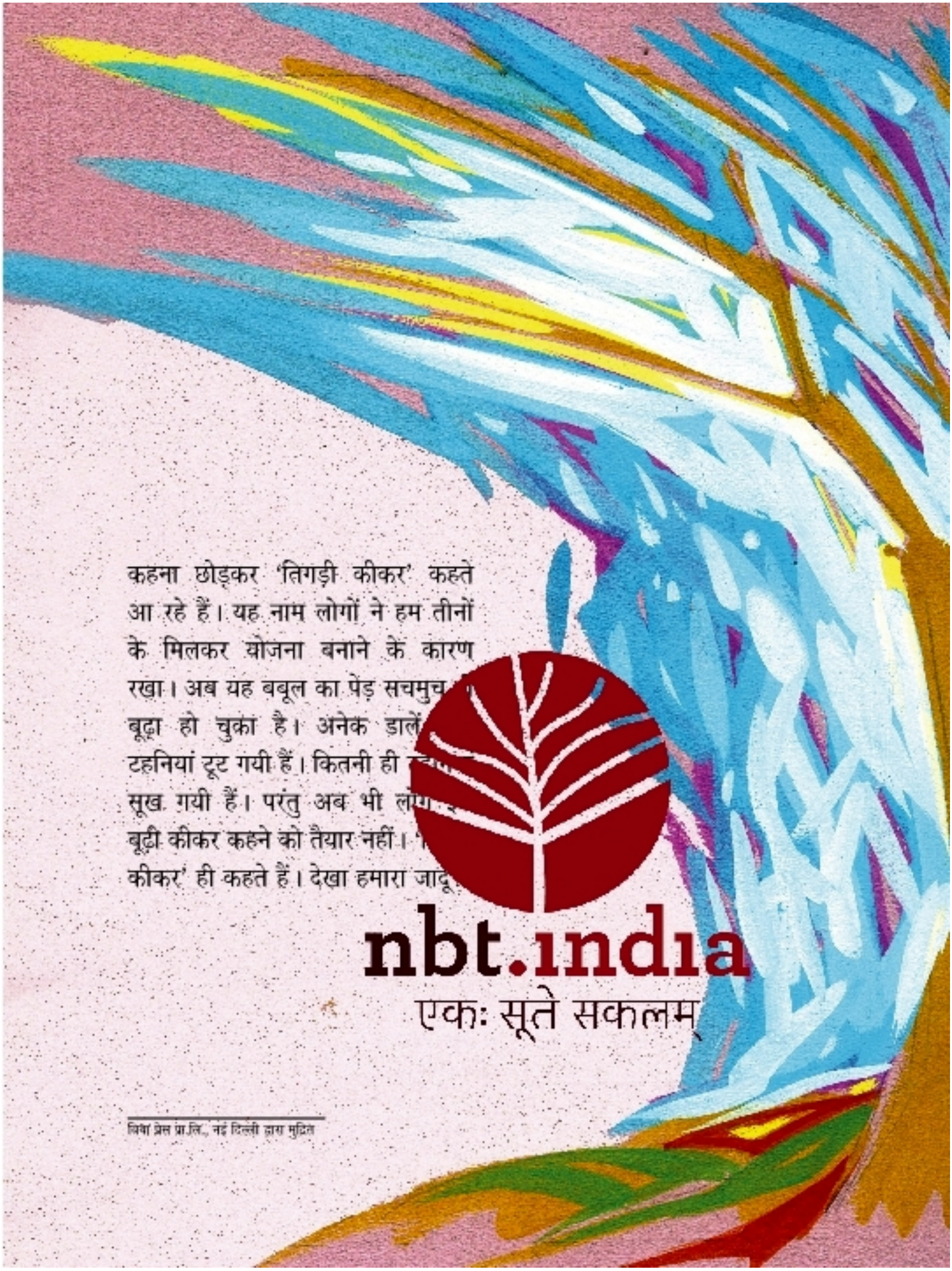

विद्या प्रेस प्रा.लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

nbt.india
एकः सूते सकलम्